(E - 105) देखोजी सीमंधरस्वामी,

(मेरी भावना—राग)

देखोजी सीमंधरस्वामी, कैसा ध्यान लगाया है,
कर उपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है। देखोजी० टेक

जगतविभूति भूतिसम तजकर, निजानंद-पद ध्याया है;
सुरभित श्वासा आशावासा, नासादृष्टि सुहाया है। देखोजी० १

कंचन वरन चलै मन रंच न, सुरगिरि ज्यों थिर थाया है;
जासपास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है। देखोजी० २

सुध उपयोग हुतासनमें जिन, वसुविधि समिध जलाया है;
श्यामलि अलिकावलि सिर सोहै, मानों धूआं उडाया है। देखोजी० ३

जीवन मरन अलाभ लाभ जिन, सबको नाश बनाया है,
सुरनरनाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है। देखोजी० ४